International Journal in Management and Social Science
Volume 14 Issue 01,January 2026 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 7.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

"सन्त शिरोमणि गुरू रविदास जी का आध्यात्मिक चिन्तन"

प्रो0 (डॉ0) मनमोहन गुप्ता
अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता
शिक्षा विभाग
रास बिहारी बोस सुभारती विश्वविद्यालय
देहरादून, उत्तराखण्ड

मोहित सिंह
शोधार्थी
शिक्षा विभाग
रास बिहारी बोस सुभारती विश्वविद्यालय
देहरादून, उत्तराखण्ड

सारांश

मध्यकालीन युग में भक्ति साहित्य का विशेष स्थान है। इस काल को भक्तिकाल का स्वर्ण युग भी कहा जाता है। इस काल में निर्गुण सन्तों का अपना एक विशेष महत्व है। इन सभी सन्तों ने मानवता का उपदेश दिया।

गुरू रविदास जी ऐसे संत है। जिन्होंने अपनी सीधी एवं सरल भाषा में मानव को समतावादी समाज के निर्माण में एक विशेष सन्देश दिया है। संत रविदास जी बड़े ही दयालु एव परोपकारी स्वभाव के सन्त है। दूसरो से प्रेम करना और सहायता करना उनका अपना स्वभाव था। सन्त शिरोमणि गुरू रविदास जी का मानना है, कि व्यक्ति के ह्रदय में भगवान के प्रति सच्ची श्रद्धा और सच्चा प्रेम नहीं है, तो मूर्ति पूजा करना मन्दिर में जाकर पूजा करना मात्र एक आडम्बर है। संत रविदास जी की वाणी में धर्म के विविध आयाम देखने को मिलते है। संत कबीर दास जी व संत रविदास जी आदि सन्तों ने ईश्वर को निर्गुण, निराकार व सभी रूपो में व्याप्त बताकर भक्ति का सरल एवं सहज मार्ग बताया। इस मार्ग में न हठ योग साधना एवं धार्मिक क्रिया थी, और न ही कोई कर्मकाण्ड पूजा पाठ करना और व्रत उपवास करना नहीं था। निर्गुण सन्तो का यह भक्ति मार्ग शुद्ध और पवित्र भक्ति मार्ग है। जो नाम भक्ति या प्रेमा भक्ति के नाम से प्रसिद्ध हुआ। संत रविदास जी की भक्ति इसी रूप में जगत् में विदमान हुई है। जिसमें सरल और सहज रूप में उस सच्चे परमात्मा के नाम का स्मरण किया जाता है। और भक्त अपने पूर्ण सर्मपण के साथ अपने ईश्वर की आराधना करता है।

मुख्य शब्द : *संत रविदास जी, आध्यात्मिक चिन्तन, निर्गुण संत, निराकार संत।*

प्रस्तावना

मध्यकालीन युग में भक्ति साहित्य का जो स्वरूप मिलता है, वह स्वामी रामानन्द जी से प्रारम्भ हुआ। स्वामी रामानन्द जी ने उत्तर भारत में भक्ति की धारा प्रवाहित की। स्वामी रामानन्द जी की शिष्य परम्परा में अनेक संन्त हुए। जिन्होने भक्ति साहित्य के माध्यम से तत्कालीन समाज को एक सुत्र में बाधने का कार्य किया है। जिनमे मुख्य निर्णुण शाखा के संत है। निर्गुण संतो में संत कबीर दास जी, संत रविदास जी का नाम विशेष रूप उल्लेयनीय माना जाता है।

मानव जीवन में प्रेम का बहुत महत्व है। प्रेम के बिना मानव पत्थर के समान होता है। सन्तों ने प्रेम को विशेष महत्व दिया है। संत संसारिक बन्धनों से मुक्त होकर परमपिता परमेश्वर के प्रेम में लीन होने का सन्देश देते है। जब मनुष्य पूर्ण सर्मपण के साथ परमात्मा के प्रेम मे लीन हो जाता है, ऐसी भक्ति प्रेमा भक्ति कहलाती है। परमात्मा से सच्चा प्रेम होने पर संसार का सारा प्रेम फीका पड़ जाता है। भक्त के लिए अपने आराध्य के अलावा कोई अन्य आश्रय नहीं होता है। संत रविदास जी को केवल प्रभु के चरणो का भरोसा है।

"रविदास आस एक राम की, अरू करहु कोऊ आस।

राम छाडि अनंत रमि हंइ, रहइ सदा उदास"।।

संत रविदास जी के अनुसार परमात्मा के प्रेम से बैठकर और कोई भक्ति नही हो सकती है, भोजन का दान करने कथा सुनने या गुफा में रहने से या केवल योग करने से अथवा माला पहनने से भक्ति नहीं हो सकती है, सच्ची भक्ति के लिए तो भक्त अंहकार त्यागकर अपने प्रभु से सच्चा प्रेम करके होती है।

हरि सा हीरा छाडि के करे आन की आस।

ने नर जमपुर जाहिगें । संन्त भाखै रविदास।।

गुरू द्वारा दिये नाम का महत्व

सभी संतो ने नाम स्मरण को विशेष महत्व दिया है। उनके अनुसार गुरू द्वारा दिया गया नाम वह चिंगारी है जो समस्त पापों को जला देती है , वैसे सभी भक्त कहीं नाम स्मरण को महत्व देते है, परन्तु संतो ने नाम के साथ कर्म पर विशेष बल दिया है, उनके लिए कर्म ही पूजा है, ऐसी मान्यता है, कि एक बार संत कबीर दास जी ने अपने पुत्र कमाल को खादी का कपड़ा बैचने बाजार भेजा बाजार से वापस आने पर संत कबीर दास जी को सारे पैसे दे दिए, तो कबीर ने पूछा किसी को कुछ दिया या नहीं, कमाल के नहीं कहने पर संत कबीर दास जी ने कहा ''बुढ़ा वंश कबीर का निपज्या पूत कमाल, हरि का सुमरिन छोड़ के घर ले आया माल'' यहाँ समझने वाली बात यह है, कि संत कबीर दास जी के अनुसार सच्ची भक्ति दीन–दुखियों की मदद करना है। इन संतो के अनुसार कोरा नाम लेने से कुछ होने वाला नही है।

नाम – नाम स्मरण के साथ कर्म का होना जरूरी है। संत रविदास जी ने भी कर्म को महत्व दिया है, उन्होने लिखा है।

जिहवा भजै हरि नाम नित हत्थ करहि नित काम।

रविदास भए निहंचित हम , मम चिंत करैगे राम।।

संतों के अनुसार नाम ही वह पारस है, जिसके स्पर्श मात्र से अवगुणों से पूरित व्यक्ति भी सोना बन जाता है। संत रविदास जी ने नाम को सर्वाधिक महत्व देते हुए लिखा है।

अब कैसे छूटे नाम रट लागी ।

प्रभुजी तुम चंदन हम पानी । जाकी अंग अंग बास समानी।।

प्रभुजी तुम धन हम मोरा , जैसे चितवत चंद चकोरा।।

प्रभुजी तुम दीपक हम बाती। जाकि जोति बरे दिन राति।

प्रभुजी तुम मोती हम धागाा। जैसे सोनहि मिलत संहागा ।।

प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भगति करे रैदास।।

संत रविदास जी जैसे संतो ने नाम को साक्षात अमृत माना है। जो जन्म–जन्म की प्यास बुझा कर जन्म मरण के बंधनो से मुक्त कर देता है, अतः रविदास ऐसे नाम रूपी महा रस को पीने की सलाह देते है, जो चढ़ने के बाद कभी नही उतरता, उन्होने लिखा है।

रविदास मदुरा का पीजिए, जो चढै चढै उतराए।

नाम महारस पीजिर जो चाढे नाहि उतराए।।

ईश्वर को पाने के लिए सच्चे मन से भक्ति करना आवश्यक है। संत रविदास जी के अनुसार अनेक प्रकार की वेशभूषा धारण करना, माला तिलक लगाना आदि बाहरी पाखण्ड है, इन पाखण्डों से परमात्मा को धोखा नहीं दिया जा सकता है, जो लोग इस प्रकार का आचरण करते है, वे अपने और परमात्मा के बीच दीवार खड़ी कर लेते है, ऐसे लोग भ्रम का शिकार होते है औरों को भी भ्रम मे डालकर मार्ग से भटकाने का काम करते है

संत रविदास जी ने कहा है–

''कपट किया रीझहो नाहि केसौ, जगु करता नाहि कांचा।

कहि रविदास भजौ हरि माधौ, सेवग हुवे मन साचा।।

''माथे तिलक हाथ जप माला , जग ठगने कू स्वाग बनाया।

मरग छाडि कुमारग डहकै, सांची प्रीत बिनु राम पाया ।।

गुरू का सर्वोपरी स्थान

संतों में गुरू का स्थान सर्वोपरी होता है। ''संत कबीर दास जी ने बलिहारी गुरू आपने गोबिन्द दियो बताए'' कहकर गुरू के महत्व को सर्वोपरी बताया हैं। संतो का मंत है, कि गुरू ही शिष्य को अज्ञान से बाहर निकालकर परमात्मा से साक्षात्कार करवा सकता है, उनकी दृष्टि मे धरती पर गुरू परमात्मा का ही रूप है, जो शिष्य को सांसारिक माया बंधनो से मुक्त कर देता है। रविदास जी कहते है।

गुरू ग्यान दीपक दिया, बाती दइ जलाए।

रविदास हरि भगति कारनै जनम मरन बिलमाय।।

संतो का मत है, कि मानव के अर्न्तमन में गुण रूपी अनेक हीरे और लाल भरे पड़े है, परन्तु वह माया के कारण इन्हे देख नही पाता है। सच्चा गुरू शिष्य के इन गुणो को पहचानकर दुर्गुणो से दूर करते हुए सदमार्ग पर ले जाता है। गुरू परमात्मा की भक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है, यह संसार एक विकट सागर है। गुरू इस भवसागर से पार करने का रास्ता बताता है।

भौ सागर दूभर अति , सिंधु मूरिख यहु जान।

रविदास गुरू पतवार है, नाम नाव करि जान।।

सभी संतो ने गुरू को सर्वोपरी स्थान दिया है, परन्तु उल्लेखनीय यह है, कि गुरू को गुरू की तरह होना चाहिए अर्थात वें गुरू को ज्ञानी और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते है। उनके अनुसार गुरू ऐसा होना चाहिए, जो शिष्य को भवसागर से पारकर जीव–आत्मा को परमात्मा से मिलाए। संत रविदास जी ने लिखा है–

''आज दिवस लेऊ बलिहारा –मेरे घर आया राम का प्यारा

कथा करै अरू अरथ विचारै आप तरै औरनि की तारौ

कहे रविदास मिलै निज दास जनम जनम के काटै पास।

संतो ने केवल गुरू के लिए ही ज्ञान का मापदण्ड स्थापित नहीं किया बल्कि वे भक्त व शिष्य के लिए भी कुछ शर्ते लागू करते हैं। संत रविदास जी ने भी साधु के लिए कहा है, कि वह भी ज्ञान पिपासु होना चाहिए। साधु व भक्त में सहजता और सरलता होनी चाहिए। वह गुणो से परिपूर्ण होना चाहिए। साधु वही है जो सबके कल्याण की बात करें जो दूसरो की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझ कर उसे दूर करने का प्रयास करे।

रविदास सोई साध भलो जउ जानहि पर पीर।

पर पीरा कह पेखि के रह वे सदा अधीर।।

संत रविदास कहते है कि जो सुख दुख लाभ हानि को एक समान समझे, जिसमें अंहकार नहीं हो जो मानवीय गुणो से पूरित हो।

सुख–दुख, हानि–लाभ, कउ–जउ, समझहि इक समान

रविदास तिन्हहि जानिए, जोगी पुरूष सुजान।।

ईश्वर का स्वरूप

संत रैदास जी का काव्य बिल्कुल सहज, निश्छल और अनुभूति से भरा हुआ काव्य है। उन्होंने अपने मन की जो छटपटाहट और पीड़ा थी, उसे ईश्वर के प्रति अपने पूर्ण सर्मपण सहित सौंप कर जिस रूप में प्रकट किया। वह एक कविता बन जाती है, वे अपनी व्यापक अनुभूति से सभी के हृदय मे एक अमिट छाप छोड जाते है, संत रविदास जी चूंकि मूलतः कवि एवं समाज सुधारक है, वें निर्गुण भक्ति के उपासक संत हैं, किंतु उन्होने अपने अराध्य को भी राम, हरि माधव के नाम से पुकारा तो कभी गोविन्द मुकुद और मुरारे आदि के नाम से पुकारा है। उनके अनुसार परमात्मा, पारब्रह्म एक ही है, उसका कोई आकार नही है, वह निराकार निर्गुण है, उनके राम संत कबीर दास जी के राम की तरह दशरथ के पुत्र नही है।

''रविदास हमारे राम जी, दशरथ करी सुत नही।

राम हमउ महि रमि रहो विश्कुटम वह माही।।''

सन्त रैदास दास जी के सुत्र वचन बुद्ध के अनीश्वरवादी और अनित्यवादी दर्शन पर आधारित है। संत कबीर दास जी की भाँति सन्त रैदास दास जी ने भी अपने ईश्वर को व्यक्तिवादी धारणा से मुक्त रखा है। उनका ईश्वर वह नहीं है, जो आकाश में बैठा है और लोगो के लिए स्वर्ग–नरक की व्यवस्था करता है।

''कृरन करीम राम हरि राद्यव जब लगि एक न पेखा

वेद कितेब कुरान पुरान, सहज नहि एक देखा ।

जोई जोई पूजिए सोई सोई कांची सहज भाव सति होइ

कहि रैदास मै ताहि को पूजी, जाकै ठाव नांव नहि कोइ।

संत कवियो ने निर्गुण ब्रहा में आस्था प्रकट करते हुए उसे पुष्प की सुगंध के समान अति सुक्ष्म तथा घट–घट वासी बताया है, ईश्वर का न तो कोई रंग है ,न रूप है न जाति है न कोई आकार है न वह जन्म लेता है। और नही वह मर सकता है, वह तो अजर अमर है, अगोचर है, निरंकार है निर्गुण है, शाश्वत है। संत कवियो ने निर्गुण ब्रहा में आस्था प्रकट करते हुए उसे पुष्प की सुगंध के समान अति सुक्ष्म तथा घट–घट का वासी बताया है। ईश्वर का न तो कोई रंग है न रूप है न जाति है न कोई आकार है, न जन्म लेता है और नही वह मर संकता है वह तो अजर अमर है, अगोचर है, निराकार है निर्गुण है शाश्वत है।

सर्व धर्म समभाव – संत रविदास जी सर्व धर्म समभाव की बात करके समन्वय पर जोर देते है, वें कहते हैं कि कोई धर्म छोटा या बड़ा नहीं होता है। सभी धर्मों का एक ही उद्देश्य होता है जो मानव मात्र का कल्याण तथा परम आंनन्द की प्राप्ति है

मुसलमान से दोस्ती, हिन्दुअन से कर प्रीत।

रैदास जोति सब हरि की सब है अपने मीत।।

निर्गुण संप्रदाय के संतो ने निरांकार अगोचर अगम अविगत, वर्णनातीत, शब्दातीत, ईश्वर को प्राप्त करने के लिए ज्ञान एव प्रेम को आधार बनाया जिन कवियो ने ज्ञान को प्राश्रय दिया वें ज्ञानाश्रयी काव्यधारा के कवियों ने प्रेम को आधार बनाया वे प्रेमाश्रयी काव्यधारा के कवि माने जाते हैं। लोक कल्याण, लोकमंगल, मानवता के उच्च आदर्शो की अपने काव्य में प्रतिष्ठा करने वाला सत्यम् शिवम्, सुदरम के सूत्र को अपने मे समाहित करने वाला सम्पूर्ण शक्ति काव्य साहित्य का अनमोल एवं अनुपम रत्न है।

ईश्वर की सर्वव्यापकता पर बल – संतो ने परमात्मा को सर्वव्यापक माना है, संतो के अनुसार परमात्मा सर्वज्ञ और घट–घट का वासी है, आत्मा व परमात्मा दोनों एक ही हैं, संतो के अनुसार परमात्मा सब कहीं विराजमान है। उसे खोजने के लिए किसी स्थान विशेष पर जाने की आवश्यकता नहीं है।

का मथुरा का द्वारिका , का काशी हरिद्वार।

रविदास खोजा दिल अपना, तउ मिलिया दिलदार।।

संतो के अनुसार परमात्मा को कहीं खोजने की जरूरत नहीं है, वह सर्वव्यापक है, कोई उसे मन्दिर मे खोजता है, तो कोई मस्जिद में, संत रविदास जी का मंत है, कि मथुरा, काशी, हरिद्वार, काबा, आदि मे जाने से कोई फायदा नही है, वह ईश्वर तो मनुष्य के अर्न्तआत्मा में निवास करता है।

तुरूक मसीति अल्लह ढढइ, देहरे हिदु राम गुसाई ।

रविदास ढूढिया राम रहिम कू जंह मसीत दोहरा नांही।।

संत रविदास जी का मत है कि राम तो सर्वव्यापक है, उनके रहने का कोई एक निवास स्थान नही है। जब वह निर्गुण व निराकार है तो उसे कही किस प्रकार खोजा जा सकता है, इसलिए उन्होंने लोगों को समझाते हुए कहा है, कि ईश्वर को पाने के लिए किन्हीं धार्मिक स्थलों पर जाने की आवश्यकता नहीं है।

कर्म का महत्व – संतो ने परमात्मा की शक्ति के लिए गृह–त्याग को जरूरी नहीं माना है। सभी संतो ने कर्म को महत्व दिया है, कर्म ही पूजा है, के सिद्धान्त में विश्वास रखते हैं। संत रविदास जी कहते है कि हमें हमेशा अपने कर्म में लगे रहना चाहिए। कर्म करना हमारा धर्म है तो फल पाना भी हमारा सौभाग्य है। संत रविदास जी ने बिना किसी आदर्शवादी, विचारधारा में न पड़ते हुए व्यावहारिक जीवन की वस्तु स्थिति को स्वीकार करते हुए अपनी बात कहीं है। उनकी चेतना मे उनकी जातीय–अस्मिता इस प्रकार व्याप्त है कि उसी मानदण्ड से वह अपने जीवन व्यवहार एव कार्य व्यापार की हर गतिविधि का अवलोकन एवं मूल्यांकन करते है उनका आत्मनिवेदन उनकी जातिगत विडम्बनाओं की उपस्थिति में स्वीकार के साथ व्यक्त हुआ है संत गुरू रविदास जी यह विशेष संकेत करते है कि उनकी अभिव्यक्ति मे सिर्फ आध्यात्मिक श्रेय की मुक्ति का स्वप्न नहीं बल्कि सामाजिक मुक्ति का स्वप्न भी विद्यमान है।

करम बधन मे रमि रहियों फल की ना तजो आस।

करम मनुष का धरम है, सन्त भाषै रविदास।।

सभी संतो ने मन को वश मे रखने का उपदेश दिया है। मन को वश मे किए बिना परमात्मा की भक्ति नहीं की जा सकती है, क्योंकि मन की चंचलता भक्ति में स्थिरता नहीं लाने देती है। संत रविदास जी ने अपनी वाणी मे मन की चचंलता का जिक्र हुआ है, इसलिए उसका मन सांसारिक बंधनों और विषय वासनाओं मे फसा हुआ है। संत रविदास जी अपने मन की चंचलता की स्थिति को इन शब्दों में प्रकट किया है।

देखि मूरिखता या मन की।

राम नाम कू छाडि अधारौ, महि ओट छुद त्रिन की ।

अभि अंतर रामु नहि जान्यौ, छानहु धूरिबन बन की।

जा दिन इह हंसा उरि जइ है छारि टठरिया तन की।

धनु ,दारा मंह रहहु लपटानो ,आपहु नहि संधि वा छन की।

जन रविदास तियागी जग आसा, लहहु और हरि चरनन की।।

यशोकत के आलोक मे कहा जा सकता है कि संत रविदास का भक्ति–दर्शन मानव समाज को नई दिशा देने वाला है, रविदास जी के काव्य का अनुशीलन करने पर हम पाते है कि उनके काव्य की सबसे बडी विशेषता कर्म का महत्व है, उनका उपदेश ''कर्म की भक्ति है'' मानव समाज को नई दिशा देने का काम करता है। बहुत से लोग जो घर छोड़कर सन्यांसी बन जाने के बाद कर्म को छोड़ देते है, और अपने जीवन–यापन के लिए घर फेरी लगाकर प्रारम्भ कर देते है, ऐसे लोग दूसरो के दया पर चलते है, जीवन–यापन करने के लिए अनेक वस्तुओ और सुविधाओं की आवश्यकता के लिए उदरपूर्ति के लिए दूसरों पर निभर रहे यह संत रविदास जी जैसे संतो को गवारां नही था। इसलिए ये सभी के लिए कर्म का महत्व सिद्ध करते है, इनके मतानुसार चाहे कोई सन्यायी हो या समान्य व्यक्ति, उसे कर्म करना चाहिए यदि इन संतो के उपदेश को साझा जाता तो समाज में बहुत बडा परिवर्तन हो सकता था। सन्त रविदास जी भक्ति मे किसी प्रकार का कोई भी पाखण्ड और आडम्बर नही था। उन्होने ईश्वर को घट –घट का वासी बताया है मानवता और भक्ति का उपदेश दिया। कि ईश्वर को खोज में कही भी जाने की आवश्यकता नही है किसी भी भूति एवं धार्मिक स्थान की आवश्यता नही है। संन्तो ने सामान्या जनता के लिए भक्ति के द्वारा खोल दिये। ऐसी वर्ग जिसके लिए पूजा स्थल और मन्दिर के द्वारा बन्ध थें। उनके लिए निर्गुण भक्ति का मार्ग खोल दिया। जन सामान्य के लिए आशा और विश्वास का संचार का संचार किया। संत रविदास जी ने मानव को जाति धर्म उच्च निम्न जैसे सभी भेदभावो को दूर कर मानवता का संदेश दिया है। जो हम सबसे लिए अनुकरणीय है संत रविदास जी वाणी में तल्कालीन समाज मे व्याप्त धार्मिक पाखण्डों का विरोध होना स्वाभाविक भी था। संत रविदास जी मानना फिर मानव को मानव से भेद करने छूवाछूत को दूर करने के लिए उन्हें अपने पदों में छूवाछूत का उल्लेख मिलता है। संत रविदास जी जो अनेक परेशानियो का सामना करना पडा जो स्वाभाविक भी था। क्योंकि चली आ रही व्यवस्था को बदलना न तो तब सरल था, और न ही अब है। संत रविदास जी के विचार उनका भक्ति भाव, आध्यात्मिक चितंन हम सबके लिए अनुकरणीय है।

निष्कर्ष :– शोध पत्र से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि सन्त रविदास जी का आध्यात्मिक चिन्तन उच्च कोटि का है। उन्होंने अपने आध्यात्मिक चिन्तन में कर्म के महत्व को सर्वोपरी माना है। सभी संतों ने मन को वश में रखने का उपदेश दिया है। मन को वश में किये बिना ईश्वर की प्राप्ति नहीं की जा सकती। सन्त रविदास जी का भक्ति दर्शन मानव समाज को एक नई दिशा देने वाला है। उन्होंने अपनी वाणी को सरल और सहज तरीके से सहज भाषा में जनता का सामने रखा है। उनकी भक्ति में कोई पाखण्ड़ नहीं है, उन्होंने ईश्वर को घट–घट का वासी माना है, तथा एक ईश्वर की महत्ता को माना है। सन्त

रविदास जी ने मानव को जाति, धर्म, उच्च, निम्न जैसे सभी भेदभावों को दूर कर मानवता का संदेश दिया है। सन्त रविदास जी के आध्यात्मिक चिन्तन में सत्संग की महिमा को सर्वोपरी माना है। जो वर्तमान समय में भी प्रचलित और प्रासंगिक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. सिंह, आचार्य पृथ्वी (2014), ''गुरू रविदास पुस्तक'', प्रकाशन– नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली। पृष्ठ सं0 – 119
2. शेरवाल, डॉ0 कुसुमबाला(2021), ''सन्त रविदास वाणी'', प्रकाशन– लक्ष्य पब्लिकेशन, जयपुर, राजस्थान, पृष्ठ सं0 – 38
3. सिंह, आचार्य पृथ्वी (2014), ''गुरू रविदास पुस्तक'', प्रकाशन – नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली। पृष्ठ सं0 – 10
4. उपाध्याय, काशीनाथ(1998), ''गुरू रविदास वाणी'' प्रकाशन – राधा स्वामी सत्संग ब्यास जिला अमृतसर, पंजाब दसवां संस्करण पृष्ठ सं0 – 83
5. सहोता, रमेश चन्द (2026) ''गुरू रविदास महाराज जी की इलाही वाणी सच्चखण्ड श्री खुरालगढ़ साहिब (पंजाब)'', प्रकाशन– श्री गुरू रविदास ऐतिहासिक धर्म स्थल श्री चरण छोह गंगा(अमृत कुण्ड) सच्चखण्ड श्री खुरालगढ़ साहिब (पंजाब), प्रथम संस्करण, पृष्ठ सं0 – 40–41
6. सहोता, रमेश चन्द (2026) ''गुरू रविदास महाराज जी की इलाही वाणी सच्चखण्ड श्री खुरालगढ़ साहिब (पंजाब)'', प्रकाशन– श्री गुरू रविदास ऐतिहासिक धर्म स्थल श्री चरण छोह गंगा(अमृत कुण्ड) सच्चखण्ड श्री खुरालगढ़ साहिब (पंजाब), प्रथम संस्करण, पृष्ठ सं0 – 60
7. सहोता, रमेश चन्द (2026) ''गुरू रविदास महाराज जी की इलाही वाणी सच्चखण्ड श्री खुरालगढ़ साहिब (पंजाब)'', प्रकाशन– श्री गुरू रविदास ऐतिहासिक धर्म स्थल श्री चरण छोह गंगा(अमृत कुण्ड) सच्चखण्ड श्री खुरालगढ़ साहिब (पंजाब), प्रथम संस्करण, पृष्ठ सं0 – 64
8. सहोता, रमेश चन्द (2026) ''गुरू रविदास महाराज जी की इलाही वाणी सच्चखण्ड श्री खुरालगढ़ साहिब (पंजाब)'', प्रकाशन– श्री गुरू रविदास ऐतिहासिक धर्म स्थल श्री चरण छोह गंगा(अमृत कुण्ड) सच्चखण्ड श्री खुरालगढ़ साहिब (पंजाब), प्रथम संस्करण, पृष्ठ सं0 – 109
9. सहोता, रमेश चन्द (2026) ''गुरू रविदास महाराज जी की इलाही वाणी सच्चखण्ड श्री खुरालगढ़ साहिब (पंजाब)'', प्रकाशन– श्री गुरू रविदास ऐतिहासिक धर्म स्थल श्री चरण छोह गंगा(अमृत कुण्ड) सच्चखण्ड श्री खुरालगढ़ साहिब (पंजाब), प्रथम संस्करण, पृष्ठ सं0 – 142
10. सहोता, रमेश चन्द (2026) ''गुरू रविदास महाराज जी की इलाही वाणी सच्चखण्ड श्री खुरालगढ़ साहिब (पंजाब)'', प्रकाशन– श्री गुरू रविदास ऐतिहासिक धर्म स्थल श्री चरण छोह गंगा(अमृत कुण्ड) सच्चखण्ड श्री खुरालगढ़ साहिब (पंजाब), प्रथम संस्करण, पृष्ठ सं0 – 158